प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७
शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- १९५ भोपाल, १२ फरवरी, डाक १३ फरवरी २०२६ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

बिखरे गुणों को जोड़ना संस्कार है। अवगुणों को त्यागना सुसंस्कार है।।

त्वरित विचार
अग्र लेख-१४

कैलाश आदमी

जीवन स्वयं में अच्छा-बुरा नहीं होता। वह तो हम जैसा बनाते हैं वैसा ही बन जाता है। यद्यपि कृत्रिम बुद्धि के नए युग में मौलिकता अप्रसांगिक होती जा रही है फिर भी लेखन में मौलिकता की आभा बनी हुई है। इसका कारण भारतीय जीवन मूल्य, संस्कृति और सभ्यता है।

भारतीय जीवन मूल्यों से अनुप्राणित व्यक्ति ऐश्वर्य पाकर भी उत्तेजित या उच्छृंखलित नहीं होता जबकि आजकल कोई गरीब व्यक्ति जब अमीरी की ओर बढ़ने लगता है तो उसमें उत्तेजना और उच्छृंखलता जैसे भाव उसके व्यवहार में झलकने लगते हैं। इसका सीधा साधा अर्थ है कि वह अपनी पुरातन संस्कृति और महापुरुषों के आचरण को विस्मृत कर देता है और ऐश्वर्य के कारण वह अंत: प्रेरणा ग्रहण नहीं कर पाता।

वैसे मेरा अनुभव यह है कि संस्कार संचयन एक अच्छी विधा है और यही सच्चा जीवन है जो लोग पुरातन मूल्यों और संस्कारों को विस्मृत या अनदेखा करने लगते हैं दरअसल, वे बिखरते जा रहे गुणों को सहेजने की कला भूल जाते हैं जो अंत:प्रेरणा से ही संभव है। इसके अभाव में व्यक्ति पर अवगुण होवी होते जाते हैं।

देश के कोई भी हो उसकी वास्तविक पहचान या मौलिक पहचान वहां की संस्कृति और सभ्यता ही होती है जिसे देशवासी एक दिन में अर्जित नहीं कर पाते बल्कि सुसंस्कृति के निर्माण में सदिया लग जाती हैं। भारत में सिंधु घाटी सभ्यता के पूर्व ही वैदिक संस्कृति का प्रसार हो गया था लेकिन सभ्यता के विकास के साथ भारतवासी नकली मुखौटा लगाने लगे जिसके परिणामस्वरूप ना केवल शहरों और कस्बों में बल्कि देश के सात लाख गांवों से भी संस्कृति का विलोप होने लगा। वैसे यूनान, मिश्र और रोम में भी ऐसा ही हुआ जबकि वहां के निवासी अपनी सभ्यता और संस्कृतियों को भारत से भी पुरातन होने का दावा करते हैं।

यदि हम संस्कार की व्याख्या करें तो उसे जातीय, सामाजिक, धार्मिक और शैक्षिक वर्गों या हिस्सों में बांटकर देखा जा सकता है। भारत में महात्मा गांधी ने जिन अहिंसक और नैतिक संस्कारों पर बल दिया उन्हें नागरिकों के समक्ष ले जाने के पूर्व उनका क्रियात्मक व व्यवहारिक प्रयोग अपने जीवन में किया। यही कारण है कि ना केवल सत्य अहिंसा बल्कि उन्होंने सर्वधर्म समभाव व अन्य मूल्यों को एकादश व्रत के रूप में प्रचलित करने के पहले उन्हें स्वयं आजमाया तथा उनकी सफलता सुनिश्चित होने पर ही उन्हें आमजन के समक्ष परोसा।

सनातनधर्मी होने का दावा करने वाले हिंदू धर्मावलंबियों के लिए वैदिक युग के तमाम ग्रंथ और उसके बाद के रामचरित मानस और महाभारत व गीता जैसे ग्रंथ उन्हें भारतीय जीवनमूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देते हैं। मेरे मतानुसार भारतीय संस्कृति इससे सर्वथा भिन्न रही है। हमारी मौलिक संस्कृति, सभ्यता और जीवन मूल्यों को कपोलकल्पित कहानियों के रूप में वर्णित रामायण या गीता जैसे ग्रंथों में नहीं समेटा जा सकता। वस्तुत: इन ग्रंथों में वर्णित कहानियों को इतिहास से जोड़कर देखा जाना ही गलत है। अहिंसा की अभिव्यक्ति देखा जाए तो प्रेम, करूणा, कोमलता सदाशयता और सदाचार जैसे मानवीय गुणों में होती है। गीता रामायण में हिंसा का आदर्श प्रस्तुत किया गया जबकि बुद्ध और महावीर की शिक्षाओं में अहिंसा का आदर्श परमार्जित रूप में अभिव्यक्त हुआ जिसे ना केवल भारत बल्कि अन्य देशों में भी सराहा जाता है। गांधीजी ने बीच का रास्ता अपनाया जिसके कारण उन्हें भी सराहना मिली जिससे यह भी स्पष्ट हो गया कि भारतीय संस्कृति को मिथकीय इतिहास में बांधे रखना उचित नहीं है। अहिंसा ही भारत की मूल व मौलिक संस्कृति रही है। जहां तक इस्लाम और ईसाइयत जैसे धर्मों का प्रश्न है इन धर्मों के प्रणेता हजरत अली और ईसा मसीह भी हिंसा की तुलना में अहिंसा को ही तरजीह देते थे तथा यही कारण है कि आज दुनिया में इन्हीं धर्मों के अनुयायियों की संख्या सर्वाधिक है।

हम प्रिय या प्यारी लगने वाली बात को आमतौर पर पसंद करते हैं यदि उसमें असत्य और हिंसा जैसे मनुष्यता विरोधी तत्वों की मिलावट ना हो क्योंकि अत्य और हिंसा के कारण जीवन से सत्यं, शिवम् व सुंदरम् की सनातन भावना तिरोहित हो जाती है। शब्द पुराने अर्थ नए, भाव नए, विधि नई और व्यवहार नया इसे ही सनातनता कहा गया है। इसीलिए धर्म, मजहब या रिलिजन कभी पुराना और बासा नहीं होता। गांधीवादी विचारक श्री काशीनाथ त्रिवेदी कहते थे कि जो पुराना और बासा है वह धर्म ना होकर धर्म का ढांचा, कलेवर या ढोंग ही है।

सत्य अहिंसा के अनुयायी को सदैव अत्यंत आशावान, अत्यंत दृढ और वैचारिक दृष्टि से अत्यंत बलशाली होना चाहिए जहां ये तीन गुण, तीन शक्तियां या तीन विशेषताएं एकसाथ इकट्ठा हो जाएं वहां वे अपना प्रभाव स्वमेव दिखाने लगती है जो इन गुणों से भरापूरा होगा उसके लिए वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को व्यवहार रूप देने में कठिनाई महसूस नहीं हो सकती। यही कारण है कि महात्मा गांधी को ना केवल भारत में राष्ट्रपिता के रूप में आदर मिला बल्कि उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ ने उनके जन्मदिन को विश्व शांति दिवस घोषित कर उन्हें पूरी दुनिया के शिखर पर खड़ा कर दिया।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

बिखरे गुणों को जोड़ना संस्कार है।
अवगुणों को त्यागना सुसंस्कार है।।

अमेरिका में हिन्दी सेवियों ने दिखाया हुनर

निर्दलीय के लिए प्रिया भारद्वाज

इस बार विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर अमेरिका के शार्लट शहर स्थित हिन्दू सेंटर विहार के सभागार में एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन समिति की अध्यक्षा (चैप्टर डायरेक्टर नार्थ केरोलाइन यूएसए) प्रिया भारद्वाज के नेतृत्व में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भारत एवं अमेरिका के राष्ट्रगान से हुई।

इसके पश्चात सुरेन्द्र, हेमंत अमीन, प्रफुल्ल मेहता, अशोक मेहता, मालती मेहता, विवेक वेनुमरि एवं अंजू अग्रवाल द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। तत्पश्चात शार्लट, उत्तरी कैरोलिना समिति की अध्यक्षा प्रिया भारद्वाज ने विश्व हिन्दी दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में आयोजित कवि सम्मेलन एवं फैशन शो में 65 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। फैशन शो के माध्यम से बच्चों एवं महिलाओं ने नारी शक्ति, ऐतिहासिक रानियाँ, भारत की विविध संस्कृतियाँ और इतिहास की सुंदर झलक प्रस्तुत की। कार्यक्रम के अंत में पति-पत्नी की प्रस्तुति के माध्यम से युवा जोड़ों के लिए एक मधुर और प्रेरणादायक संदेश दिया गया। कार्यक्रम के मध्य आयोजित कवि सम्मेलन में अंजू अग्रवाल, श्वेता गुप्ता, प्रवीण तिवारी, तोषी, तृप्ति तिवारी, आशीष तिवारी एवं प्रिया जी ने अपनी सशक्त कविताओं का पाठ किया, जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में आयोजित फैशन शो का मुख्य विषय रहा। महिलाओं ने रंग-बिरंगी भारतीय वेशभूषा में विभिन्न भारतीय त्योहारों को प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम का समापन पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र वितरण के साथ किया गया। साधना मिश्रा ने मैं दीवानी में रिंधिमा के साथ उत्तम प्रस्तुति दी और दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए ।

नन्हे कलाकारों की प्रस्तुतियों ने भी सभी को भावविभोर कर दिया। आशी के द्वारा प्रस्तुत भरतनाट्यम, तोषी के बाल कलाकारों की टुकुर-टुकुर प्रस्तुति विशेष आकर्षण रही। दिव्या त्रिपाठी ने सरस्वती वंदनाकी मनमोहक प्रस्तुति दी।आशी और अनन्या ने उत्तम नृत्य प्रस्तुति दी ।

कोरियोग्राफर सोमा निहारिका पटेरिया एवं तोषी चौरे के निर्देशन में बच्चों द्वारा एवं देशभक्ति विषय पर शानदार नृत्य प्रस्तुत किया गया। आशीष के देशभक्ति से ओत-प्रोत गीत 'होठों पर सच्चाई रहती है' ने श्रोताओं में राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत कर दी। अन्य प्रस्तुतियों में साधना मिश्रा का नृत्य तथा राकेश अरोड़ा और रीना अरोड़ा द्वारा प्रस्तुत गीत चंदन सा बदन चंचल चितवन और सावन जा महीना शामिल रहा।जो सभी ने बहुत सराहा । आशीष जी के गीत को सुनकर दर्शक मात्र मुग्ध हो गए और चंदन जी ने भी उत्तम प्रस्तुति दी ।

इसी अवसर पर बच्चों के बौद्धिक विकास एवं हिन्दी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

सामूहिक रूप से यह आयोजन हिन्दी भाषा, भारतीय संस्कृति और सामुदायिक एकता का सुंदर उत्सव रहा।

करमबत्रा जी, नेहा कटारिया और प्रिया भारद्वाज द्वारा आर्ट ग्रिड वर्क शॉप और ऑनलाइन प्रतियोगिता के छात्रों को पुरस्कृत किया गया । तकनीकी कार्य का संचालन आलोक दवे , शेखर और श्वेता पांडे , निधि शर्मा, गुड्डी ,दिव्या चौबे द्वारा किया गया । सारा शार्लोट हिंदी के रंगों में सराबोर हो गया ।

नेपाल में जेन जी के विद्रोह की व्याख्या

निर्दलीय के लिए विशेष

विनोदकुमार विश्वकर्मा

अखबारी मीडिया की महिमा पर विख्यात शायर अकबर इलाहाबादी ने कभी लिखा था, खीचों न कमानों को न तलवार निकालो, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो लेकिन नेपाल के जेन-जी आंदोलन पर नजर डालें तो संचार तन्त्र का नवीनतम् संस्करण सोशल मीडिया तो अकबर इलाहाबादी की कल्पना से भी आगे निकाल गया। जेन-जी आंदोलन ने एशियाई राजनीति में डिजिटल अभिव्यक्ति की केंद्रीयता को रेखांकित किया है।

जेन-जी आज की युवा पीढ़ी है । यह 28 साल से कम उम्र का समूह है । 1997 से 2012 के बीच पैदा हुई पीढ़ी को जेन-जी कहा जाता है । यह पीढ़ी कंप्यूटर और इंटरनेट के युग की पीढ़ी है । यह वह पीढ़ी है जो मोबाइल फ़ोन के साथ बड़ी हुई है । इसने दुनिया और ब्रह्मांड को इंटरनेट के ज़रिए समझा है। भाद्रपद माह की 23 और 24 गते (8 और 9 सितम्बर) को देश में इस पीढ़ी ने जो आंदोलन छेड़ा, उसने न सिर्फ़ राजनीतिक उथल-पुथल मचा दी, बल्कि सत्ता भी बदल दी वो भी लगभग एक ही दिन में । इसने देश में दशकों से जमी राजनीतिक व्यवस्था को उलट-पुलट कर दिया । इस पीढ़ी ने नेपाली समाज में असंतोष और निराशा के लंबे समय से चले आ रहे बांध को तोड़ दिया। भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और आर्थिक असमानता के खिलाफ इसी पीढ़ी के उभार के कारण दशकों से सत्ता पर काबिज रही पीढ़ी घुटने टेकने पर मजबूर हो गई । यह पीढ़ी पूरे विश्व में फैली हुई है और इसने न केवल नेपाल में बल्कि अन्यत्र भी हलचल मचा दी है।

बांग्लादेश में कोटा व्यवस्था के खिलाफ जुलाई क्रांति वहाँ की जेन-जी पीढ़ी ने की थी । केन्या में, जेन-जी ने वित्त विधेयक के खिलाफ विद्रोह किया। थाईलैंड में, यही वह पीढ़ी है जिसने लोकतंत्र की मांग करते हुए राजशाही और सेना के खिलाफ आवाज उठाई थी । चाहे हांगकांग में लोकतंत्र के लिए संघर्ष हो या ईरान में महिलाओं की आज़ादी की माँग, यही पीढ़ी इसकी माँग कर रही है । इंडोनेशिया में नेपोकिड्स अभियान ने नेताओं और सांसदों के बच्चों की विलासितापूर्ण जीवनशैली को हिलाकर रख दिया है । फिलीपींस में इसी तरह का आंदोलन होने के बाद, नेपाली जेन-जी उत्साहपूर्वक टिकटॉक सहित सोशल मीडिया पर वही अभियान चला रहे थे, जिसकी जानकारी नेपाली राजनीति में जड़ें जमा रही पीढ़ी को नहीं थी । लोकतांत्रिक व्यवस्था में समानता होनी चाहिए लेकिन सत्ता से चिपकी जनता के मुद्दों को दबाने वाली पीढ़ी को यह पसंद नहीं आया । पुरानी पीढ़ी ने लोकतंत्र के लिए लड़ाई लड़ी थी लेकिन सत्ता में रहते हुए वे कुशासन करते रहे । जेन-जी यही बदलना चाहते थे जिनके बारे में कहा जाता था कि उन्हें राजनीति से कोई सरोकार नहीं, उन्होंने सरकार बदल दी ।

नेपाल में जेन-जी के नेतृत्व में अभूतपूर्व विरोध प्रदर्शनों की लहर ने देश की अंतरात्मा को झकझोर कर रख दिया। भ्रष्टाचार, राजनीतिक अस्थिरता, भाई-भतीजावाद और पक्षपात के खिलाफ गुस्से से शुरू हुआ यह आंदोलन, सोशल मीडिया पर अचानक लगे प्रतिबंध से और भड़क गया। नेपाल में 4 सितम्बर को सोशल मीडिया बंदिश के बाद से ही आंदोलनों की नींब पड़ चुकी थी। 8 सितम्बर आते-आते आंदोलनकारियों ने सोशल मीडिया पर प्रतिबन्ध के साथ- साथ सरकार को भ्रष्टाचार मुद्दे पर भी घेरा और जबर्दस्त प्रदर्शन किए। दुनिया ने पहली बार नेपाल में सोशल मीडिया का ऐसा प्रचंड रूप देखा जिसने समूचे शासन तन्त्र को ध्वस्त कर डाला।

अनियन्त्रित सोशल मीडिया की इस प्रचण्ड शक्ति की चप्पे-चप्पे में मौजूदगी दोधारी तलवार का भी काम कर सकती है। देश की यह घटना हमें यह सतर्क कराती है कि डिजिटल युग में शक्ति अब सिर्फ हथियारों में नहीं, बल्कि स्क्रीन्स में भी है। यह इतिहास का पहला ऐसा विद्रोह है जो सीधे तौर पर सोशल मीडिया प्रतिबंध से शुरू हुआ और सरकार को गिराने तक पहुंचा दिया। इस आंदोलन में युवाओं और पुलिसकर्मियों के बीच झड़प भी हुई और 73 लोग मारे गए। इसके बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को इस्तीफा देना पड़ा

आंदोलनकारियों के बीच गुस्सा सिर्फ सोशल मीडिया मंच पर प्रतिबंध और सरकार के भ्रष्टाचार को लेकर ही नहीं था, बल्कि इस आंदोलन में जिसने आग में घी डालने का कार्य किया वह थी नेपोकिड्स की आलीशान जिंदगी। एक तरफ जहाँ देश गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई की मार झेल रहा है तो वहीं नेताओं के बच्चे विदेशों में आलीशान जीवन जी रहे हैं। नेपाल के युवाओं ने सोशल मीडिया पर PoliciansNepoBabyNepal और NepoBabies जैसे हैशटैग चलाकर उन्हें बताया कि कैसे देश के राजनेताओं के बच्चे उनके टैक्स के पैसों को अपनी आलीशान जीवन शैली में लगा रहे हैं।

नेपोटिज्म का अर्थ होता है भाई भतीजावाद वाली प्रथा, जिसमें मशहूर हस्तियों के बच्चे को उनके पारिवारिक संबंधों के कारण आसानी से अवसर मिल जाते हैं। मूलत: नेपाल में नेपोबेबीज शब्द से नेताओं के परिवार का विरोध किया जा रहा है, जो आम लोगों के पैसों को अपनी विलासितापूर्ण जीवन शैली जीने में लगा रहे हैं। सोशल मीडिया पर ऐसे कई पोस्ट शेयर किए, जिसमें कई राजनेताओं के बच्चों को आलीशान जीवन जीते हुए दिखाया गया। पूर्व प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउवा की बहु शिवाना श्रेष्ठ का वीडियो पोस्ट किया गया। नेपाली समाचार पत्रों के अनुसार उन्होंने अपने सोशल मीडिया पर आलीशान घर और फैशन से जुड़े फोटो वीडियो पोस्ट किए थे हालांकि अब उनका इंस्टाग्राम अकाउंट निस्क्रिय हो चुका है। प्रदर्शनकारियों ने शिवाना और उनके पति जयवीर सिंह देउवा को निशाना बनाते हुए उनके आलीशान जीवन को शेयर करते हुए विरोध किया। इसी तरह जनता के बीच कई नेपोकिड्स को लेकर विरोध हुआ।

जेन-जी प्रदर्शनकारियों की तरफ से जिन नेपोकिड्स को निशाना बनाया गया, उनमें सबसे प्रमुख नाम श्रृंखला खतिबड़ा का है। वह पूर्व स्वास्थ्य मंत्री विरोधी खतिबड़ा की बेटी और पूर्व मिस नेपाल रह चुकी हैं। सोशल मीडिया पर इनकी विदेश यात्राओं और लग्जरी लाइफस्टाइल से जुड़े फोटो साझा किए गए । इसके साथ ही महंगे कपड़े और डिजाइनर हैंडबैग दिखाए गए। इंस्टाग्राम से पता चला कि उन्होंने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की और उनकी शादी संभव सिरोहिया से हुई है, जो कान्तिपुर मीडिया समूह के प्रबंध निदेशक हैं। तस्वीरों में वह स्वीट्जरलैंड, लन्दन, कैलिफोर्निया, कोलोराडो जैसी जगहों पर छुट्टियाँ मनाती हुई नजर आ रही हैं।

नेपाल पत्रकार महासंघ और नेपाल प्रेस यूनियन के नेतृत्व में पत्रकारों ने सोशल मीडिया पर सरकार के प्रतिबंध के खिलाफ राजधानी में भाद्रपद 22 को बैनर के साथ प्रदर्शन किया और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा की मांग की । प्रदर्शनकारियों ने नेटवर्क बंद, आवाज बंद, लोगों का मुंह बंद नहीं किया जा सकता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हमारा अधिकार है, और सरकार ने हमारे पेट पर लात मारी जैसे नारे लगाए और सरकार के फैसले को अलोकतांत्रिक बताया तथा इसे तुरंत वापस लेने की मांग की । पत्रकार नेताओं ने सोशल प्लेटफॉर्म बंद करके नागरिक अधिकारों का गंभीर उल्लंघन करने के लिए सरकार की आलोचना की और उस पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश का उल्लंघन करने का आरोप लगाया।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने सत्तारूढ़ पार्टी के कुछ नेताओं के विचारों के अनुरूप सरकार को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने का निर्देश दिया। इससे पहले विपक्षी पार्टी के नेताओं ने इस कदम का विरोध करते हुए कहा था कि इससे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगेगा । नेपाल सरकार द्वारा गैर-सूचीबद्ध सोशल मीडिया प्लेटफार्मों को बंद करने के निर्णय के बाद, अंतर्राष्ट्रीय मीडिया ने इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रहार के रूप में व्याख्यायित किया । अल-जजीरा, एपी, रॉयटर्स और डीडब्ल्यू सहित मीडिया आउटलेट्स ने चिंता व्यक्त की कि सरकार के इस कदम से लोगों के मौलिक अधिकार और सूचना तक पहुंच प्रभावित होगी ।

सोशल मीडिया पर प्रतिबंध दर्शाता है कि देश में कितनी रोजगारी की कमी है और अवसरों की अनुपलब्धता है। देश के युवा इस बात से परेशान है कि पिछले कई वर्षों से 70 साल से ऊपर के ऐसे नेता सत्ता में आ रहे हैं, जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं। नेपाल सन् 2008 में गणतन्त्र बना, लेकिन तब से लेकर आज तक एक ही जैसे नेता सत्ता में आते जाते रहे हैं। जैन-जी आंदोलन पूर्व सरकार ने गलत सूचना और जवाबदेही सुनिश्चित करने के नाम पर 26 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स , जैसे -फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम आदि पर प्रतिबंध लगा दिया था, जिससे 1. 43 करोड़ यूजर्स प्रभावित हुए। लेकिन यह प्रतिबंध युवाओं, खासकर जेन-जी के लिए भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और बेरोजगारी के खिलाफ बगावत का प्रतीक बन गया। यह आंदोलन सोशल मीडिया की शक्ति का सबसे ताजा प्रमाण है इसे इतिहास का पहला सोशल मीडिया विद्रोह के रूप में देखा जा रहा है। प्रतिबंध के बावजूद, प्रदर्शनकारी ऑफलाइन संगठित हुए, लेकिन सोशल मीडिया की अनुपस्थिति ने उनके गुस्से को और भड़काया । सोशल मीडिया की अत्यंत तीव्र गति और उसकी जबर्दस्त व्यापकता ही उसकी सबसे बड़ी ताकत है। वास्तव में, आज जिसके जेब में मोबाइल फोन है वही नागरिक पत्रकार है । सोशल मीडिया की एक बड़ी ताकत यह है कि जहाँ प्रिन्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भी नहीं पहुँच पाता, वहाँ वह मिनटों में सूचना फैला देता है। राजनेताओं के घरों में तोड़फोड व आगजनी के अलावा, राष्टपति भवन, सुप्रीम कोर्ट, प्रधानमंत्री आवास, सिंहदरबार, संसद भवन आदि में भी आग लगा दी गई।

विदेश में रहने वाले युवा भी अब इस बात से वाकिफ हो गए हैं कि उन्हें वोट देने के लिए नेपाल लौटना चाहिए। यह भावना न केवल जेन जी पीढ़ी को, बल्कि सभी नेपालियों को देश के प्रति उनकी जिम्मेदारी की याद दिला रही है। दूसरी ओर, यह पीढ़ी नेतृत्व में एक नये चेहरे की तलाश में है।

-काठमांडू